मौत को याद करो लेकिन उस्की तमन्ना ना करो

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.

एक हज़ार मुन्तखब हदीसे मिश्कात शरीफ हिन्दी.

बिस्मिल्लाहिर्रेहमानिर्रेहिम

नोट : नीचे दी गई तमाम रिवायते, हदीष का खुलासा है.

मौत को याद करना

1} तिर्मिज़ी, इबने माजा और नसाई | रावी हज़रत अबू हुरैरह रदी.

हुज़ूर ﷺ ने फरमाया - लज्ज़तो को खत्म कर देने वाली मौत को कसरत के साथ याद किया करो.

2} तिर्मिंजी, नसाई और इबने माजा | रावी हज़रत बुरैदा रदी.

हुज़ूर ﷺ ने फरमाया - जब मोमिन मरता हे तो उसकी पेशानी पसीने से तर हो जाती हे.

3} अबू दाउद | रावी हज़रत उबैदुल्लाह बिन खालिद रदी.

हुज़ूर ﷺ ने फरमाया - अचानक मौत अल्लाह की नाराज़गी

की वजह से होती हे.

वजाहत - यह हुक्म काफिर के लिये हे जबकि मोमिन के लिये अचानक मौत रहमत का ज़रिया होती हे.

मौत की तमन्ना न करे

1} अहमद और तिर्मिज़ी | रावी हज़रत हारिसा बिन मुज़र्रिबम रदी.

मे हज़रत खब्बाब (रदी) के पास गया, उनके जिस्म पर दाग दिये जाने के सात निशानात थे, खब्बाब (रदी) ने बयान किया कि अगर मेने हुज़ूर ﷺ से यह फरमान न सुना होता कि तुम मे से कोई आदमी मौत की तमन्ना न करे तो मे ज़रूर मौत की तमन्ना करता.

मौत के करीब वाले आदमी के पास कहे जाने वाले कलिमात का बयान

1} अबू दाउद | रावी हज़रत मुआज़ बिन जबल रदी.

हुज़ूर ﷺ ने फरमाया - जिस आदमी का आखिरी कलिमा “ला इला-हा इल्लल्लाह" हो वह जन्नत मे दाखिल होगा.

वज़ाहत - जो उस आदमी के पास जाये जो मरने के करीब हो उसको चाहिये कि वह उपर दर्ज हुआ कलिमा पढे ताकि वह भी यह कलिमा पढकर जन्नत का मुस्तहिक बन सके.

2} तिर्मिज़ी, इबने माजा | रावी हज़रत आयशा रदी.

हज़रत अबू बकर सिद्दीक (रदी) ने हुज़ूर ﷺ का बोसा लिया (चूमा) जबकि आप इन्तेकाल फरमा चुके थे.

वज़ाहत - मय्यत का बोसा लेना जायज़ हे.